वर्ष-9, अंक-1, अक्टूबर 2021

ISSN: 2349-4654

नाद-नर्तन जर्नल ऑफ डांस एण्ड म्यूजिक वर्ष : 9, अंक : 1, अक्टूबर 2021

पद्मभूषण पं. कृष्णराव शंकर पंडितः व्यक्तित्व एवं कृतित्व

गीतांजलि

शोधार्थी, संगीत एवं ललित कला संकाय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

Paper recieved on : September 4, Return on September 15, October 14, Accepted on October 19, 2021

सार-संक्षेप

भारतीय संस्कृति के उत्थान में हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की भूमिका अभूतपूर्व रही है। सैकड़ों वर्षों से अनेक महान विभूतियों ने अपने-अपने समय में संगीत की सेवा की है। उसी के फलस्वरूप आज हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत संपूर्ण धरा पर प्रकाशमान है। पंडित कृष्णराव शंकर पंडित जी ऐसे ही एक महापुरुष हैं, जिन्होंने अपने अंतिम समय तक संगीत की सेवा की। अपने समय की विभिन्न चुनौतियों का सामना करते हुए ग्वालियर घराने की टकसाली परंपरा को बिना किसी प्रकार की छेड़छाड़ किए उसके शुद्ध रूप को बनाए रखा। पंडित जी के प्रायोगिक पक्ष के साथ-साथ उनके शैक्षणिक पक्ष पर भी प्रकाश डाला गया है। पंडित जी ने संगीत के प्रचार-प्रसार हेतु संगीत विद्यालयों की स्थापना के साथ-साथ संगीत की अनेक पुस्तकों की भी रचना की। इस शोध पत्र में ऐतिहासिक, विश्लेषणात्मक पद्धतियों का प्रयोग किया गया है। विस्तार से समझने के लिए प्राथमिक तथा द्वितीयक स्रोत का प्रयोग किया गया है। प्राथमिक स्रोत के तहत ग्वालियर घराने के कई प्रतिष्ठित कलाकारों जैसे पंडित लक्ष्मणकृष्णराव पंडित जी, विदुषी मीता पंडित, पौत्र श्री अतुल पंडित, पंडित कृष्णराव शंकर पंडित जी व शंकर गंधर्व महाविद्यालय के शिष्य डॉक्टर खेर, श्री सुरेंद्र दंड़वते, श्रीमती वीणा जोशी (पंडित एकनाथ सरोलकर जी की सुपुत्री) आदि गुनीजनों का साक्षात्कार लिया गया है तथा द्वितीयक स्रोत के तहत ग्वालियर घराने और पंडित जी से संबंधित कई पुस्तकों, आलेखों का भी अवलोकन किया गया है।

मुख्य शब्द : ग्वालियर घराना, तोमर वंश, पं. कृष्णराव शंकर पंडित, ग्वालियर गायकी, शंकर गंधर्व महाविद्यालय।

शोध-पत्र

ग्वालियर संगीत की भूमि मानी जाती है। यहाँ की संगीत परंपरा बहुत प्राचीन है और तोमर वंश के बहुत पूर्व ही अत्यंत समृद्धशाली रही है। ''ग्वालियर संगीत परंपरा के संस्थापक राजा मानसिंह तोमर (1486-1516) माने जाते हैं, जिन्हें ध्रुपद गायन शैली का पिता भी कहा जाता है। इनके दरबार को बहुत से नायकों ने विभूषित किया था जैसे नायक चरजू, नायक बैजू, नायक करण, नायक महमूद लोहंग, नायक भगवान और नायक ढोंढू आदि।''[1] राजा मानसिंह तोमर स्वयं एक उच्च कोटि के संगीतज्ञ थे तथा अपने दरबारी संगीतज्ञों, नायकों की सहायता से उन्होंने 'मानकौतुहल' ग्रंथ की रचना भी की। उन्होंने प्रचलित ध्रुपद शैली को एक नया मोड़ देकर उसके गीतों में बृजभाषा के शब्दों का प्रयोग करके लोकप्रिय बनाया, साथ ही संगीत के प्रचार के लिए किले में उन महान संगीतज्ञों की सहायता से एक विद्यालय की स्थापना की, जहाँ की संगीत सम्राट तानसेन को बाल्यकाल से संगीत शिक्षा प्राप्त हुई। सम्राट अकबर के दरबार में ध्रुपद शैली अपने परमोत्कर्ष पर पहुँची। जिसमें की नवरत्नों में ग्वालियर के तानसेन भी थे। आज भी ग्वालियर में तानसेन की समाधि ग्वालियर किले के नीचे विद्यमान है। जहाँ की प्रत्येक वर्ष भारतवर्ष के संगीतकार तथा संगीत प्रेमी अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

सौभाग्यवश राजा मानसिंह के बाद दक्षिण में जिन शासकों का राज्य रहा, वह भी बड़े संगीत प्रेमी थे। जिसके कारण ग्वालियर की संगीत परंपरा का विकास होता रहा। चाहे वह ध्रुपद हो या ख्याल शैली हो। सिंधिया राजवंश ने भारतीय संगीत को जीवित रखने और पुष्ट बनाने में जो अद्वितीय योगदान दिया है, वह असाधारण है। दौलतराव सिंधिया से लेकर माधवराव सिंधिया तक प्रत्येक नरेश ने अपने राज्यकाल में गायक-वादकों को उदार आश्रय दिया। इन्होंने बड़े मोहम्मद खां, नत्थन पीरबख्श और उनके नाती हस्सू-हद्दू तथा नत्थू खां जैसे महान गायकों को संरक्षण दिया तथा इन्हीं के संरक्षण में ग्वालियर की ख्याल गायकी जन्मी, विकसित हुई और सारे हिंदुस्तान में छा गई।

ग्वालियर में ही रहने वाले विद्वान कुलीन परंपरा के पंडित परिवार ने ग्वालियर की इस महान विरासत (ख्याल गायकी) को अपने अथक लगन, परिश्रम, श्रद्धा तथा तपस्या से आत्मसात किया और उसका प्रचार व प्रसार सारे देश में किया। पंडित परिवार के पं. गणपतराव, पं. शंकरराव, पं. एकनाथ पंडित जी ने उस्ताद हद्दू खां, उस्ताद नत्थू खां तथा उस्ताद निसार हुसैन खां से शिक्षा प्राप्त की। पं. शंकरराव पंडित तो उस्ताद निसार हुसैन खां साहब के प्रिय शिष्य थे। ''उस्ताद निसार हुसैन खां साहब जब वृद्ध हो गए तो लोगों से कहते थे–यदि

मेरे जवानी का गाना सुनना हो तो पर्दा लगाकर शंकरराव को सुनो, जैसे मैं ही गा रहा हूँ।''[2]

इस श्रेष्ठ पारंपरिक संगीतमय वातावरण में 26 जुलाई 1893 में शंकर पंडित जी के घर एक कुल दीपक ने जन्म लिया जो कृष्णराव शंकर पंडित जी के नाम से विख्यात हुए। उनके इस पुत्र ने उनका व ग्वालियर का नाम संसार भर में किया व ग्वालियर गायकी का प्रचुर मात्रा में प्रचार व प्रसार किया।

''कृष्णराव पंडित जी को बचपन से ही संगीत से अत्यंत लगाव था। खिलौनों की बजाय उन्हें तानपुरे और तबले के प्रति ज्यादा आकर्षण था। उनकी आवाज की गुणवत्ता देखकर शंकर राव पंडित जी अत्यंत प्रसन्न हुए। जनकगंज मिडिल स्कूल में दाखिले के साथ-साथ ही उनकी संगीत की शिक्षा प्रारंभ हुई। स्कूली शिक्षा और अभ्यास के बावजूद वे घंटों तानपूरा तथा तबले के साथ संगीत का अभ्यास करते रहते थे। शंकर पंडित जी ने यह देखकर कि संगीत की यह धरोहर उनके प्रिय पुत्र के हाथों सुरक्षित रहेगी, उनकी स्कूली शिक्षा बंद करवा दी।''[3] एक तो पं. कृष्णराव जी जन्मजात प्रतिभाशाली, उस पर दिन-रात चार-चार उस्तादों, उस्ताद निसार हुसैन खां, पं. शंकरराव, पं. गणपत राव तथा पं. एकनाथ की देखरेख में उनकी तालीम तथा अभ्यास के कारण कृष्णराव जी ने केवल 14 वर्ष की उम्र में मथुरा नगर में अपना पहला कार्यक्रम प्रस्तुत किया। इस कार्यक्रम के पश्चात् कार्यक्रमों का सिलसिला दिनों दिन बढ़ता ही गया और हर स्थान पर उन्हें यश प्राप्त हुआ तथा 18 वर्ष की आयु में सन् 1911-12 तक सातारा जिले की दरबारी गायक रहे। सन् 1926 में पुनः ग्वालियर के दरबारी गायक के पद पर आसीन हुए। पंडित जी को ताल सम्राट, ताल बादशाह के साथ-साथ कोठी वाले गवैया व कड़ी भाऊँ जैसा नाम से भी बुलाया जाता था। कोठी वाले गवैया इसलिए क्योंकि उनके पास हजारों रचनाओं को याद रखने की असाधारण शक्ति थी।

स्वर साधना

आवाज की साधना के लिए ब्रह्ममुहूर्त अर्थात् सूर्य उदय से पूर्व पं. शंकरराव जी, कृष्णराव जी को जंगल में ले जाया करते थे, जहाँ स्वर साधना करवाई जाती थी। खरज से लेकर अतितार सप्तक तक के स्वरों की साधना करवाई जाती थी, परिणाम स्वरूप उनमें तीन सप्तकों में आसानी से विचरण करने की क्षमता आजीवन रही। ग्वालियर घराने में कठोर स्वर साधना, तालीम का एक आवश्यक अंग है। शुद्ध आकार के प्रकारों का अभ्यास, खरज साधना, तीनों सप्तकों में कहीं से कोई भी स्वर लेने की क्षमता, मेरूखंड पर आधारित कठिन अलंकारों का अभ्यास, मींड, घसीट द्वारा स्वर लेना, स्वरों को अपनी गहराई से लेना, गमक के विभिन्न प्रकारों का अभ्यास इत्यादि का अभ्यास करवाया जाता था। गायन के साथ-साथ उन्हें पखावज, तबला, बीन और सितार की शिक्षा भी दी गई।[4]

व्यक्तित्व

पंडित जी स्वभाव से सरल, स्वाभिमानी और सिद्धांतों पर जीवनयापन करने वालों में से थे। वार्तालाप में विनम्र, मितभाषी, स्वाभिमानी एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व संपन्न, पंडित जी का जीवन सतत साधना, प्रदीर्घ श्रम एवं विशुद्ध गुरु-भक्ति का जीवन रहा है। अपनी विद्या तथा कर्तव्य पर अगाध निष्ठा एवं विश्वास के कारण उन्होंने जीवन में सदैव सफलता और विजय प्राप्त की है। ''जीवन के प्रत्येक अंग में पंडित जी की हिस्सेदारी रहती थी। चाहे सुनार से गहने बनवाने हो या मकान बनवाना हो। उसका डिजाइन वे उसे समझाकर बनवाते। रोजमर्रा की वस्तुओं की जैसे अनाज, कपड़ा, सब्जी आदि की उन्हें अच्छी जानकारी थी। खाली बैठना, उन्हें बिल्कुल पसंद नहीं था।''[5]

डॉक्टर खेर ने अपने साक्षात्कार में बताया हैं कि पंडित जी अपने वृद्धावस्था में काफी फुर्तीले थे। पंडित जी के यहाँ भैंसें रहती थी और पंडित जी स्वयं ही उनकी देख-रेख किया रखते थे। एक बार की बात है उनकी एक भैंस गर्भवती थी और उठ नहीं पा रही थी, नीचे ही बैठी थी। पंडित जी ने मुझे बुलावा भेजा, तो मैं वहाँ पहुँच गया। भैंस को देखते ही मैं समझ गया कि उसे क्या तकलीफ है। मैंने पंडित जी से कहा कि मुझे अब इसे एक इंजेक्शन लगाना पड़ेगा, आप किसी व्यक्ति को बुला लीजिए जो इसे पकड़ कर रखें। पंडित जी ने कहा तुम दवा लगाओ, मैं इसे पकड़ लूँगा। यह सुनकर मैं सोचने लगा कि यह तो काफी वृद्ध आदमी है। ये कैसे उसे रोक पाएँगे। तब उनकी वर्ष लगभग 73 से 74 होगी। किंतु और कोई व्यक्ति आसपास ना होने के कारण पंडित जी ने ही यह कार्य किया। फिर मैं इंजेक्शन लगाने लगा। इस क्रिया को करने में 10 मिनट लग गए और मैंने यह देखा कि पंडित जी ने भैंस को सिंह से पकड़ रखा है तथा उन्होंने भैंस को टस से मस नहीं होने दिया। यह देखकर मैं आश्चर्यचकित रह गया। जब मैंने यह बात बाहर लोगों को बताई तब लोगों ने बताया कि अरे ! पंडित जी तो पहलवानी किया करते थे उनके लिए यह कोई बड़ी बात नहीं है।

पंडित जी के व्यक्तित्व का एक पक्ष यह भी था कि वह अपने सभी शिष्यों से बड़ा प्रेम करते थे, डॉक्टर खेर ने अपने साक्षात्कार में, ''मुझे याद है कि जब मैं काम की वजह से जम्मू गया था, तब पंडित जी का मेरे लिए पत्र आया था। जिसमें उन्होंने मेरा हालचाल पूछा था, मैं तो यही सोचता हूँ कि मैं कितना सौभाग्यशाली हूँ। पंडित जी के तो हजारों लाखों की संख्याओं में शिष्य हैं, मैं तो इनमें से कहीं भी नहीं

किंतु फिर भी पंडितजी को मेरी कितनी चिंता है। ऐसा गुरु शिष्य प्रेम मैंने कहीं नहीं देखा है।''

पंडित जी को बच्चों से बड़ा प्रेम था। वह सदैव बच्चों का उत्साह बढ़ाते थे तथा संगीत सीखने के लिए प्रेरित करते थे। पौत्र श्री अतुल पंडित जी ने अपने साक्षात्कार में बताते हैं ''जब हम छोटे बच्चे थे, स्कूल/विश्वविद्यालय में पढ़ रहे थे, तब हम अपनी गर्मी की छुट्टियों के लिए ग्वालियर जाते थे। हम पूरे विस्तारित परिवार, हमारे चाचा (काका), चचेरे भाई आदि को देखते थे। यह हमारे लिए खुशी का समय था, दादाजी हमेशा हम सभी का स्वागत मराठी में कह कर करते थे... या... बसा... खा... पिया... अर्थ... आओ... बैठो... खाओ और पियो। यहाँ तक कि वह हमें पुराने समय की कहानियों से सूनाते थे जैसे कि हमें ''मुंज'' (हिंदी में धागा समारोह) या जीवन के बारे में अन्य चीजों के बारे में डरावनी कहानियाँ सुनाना-हँसना और हर समय खुश रहना। मैंने दादाजी को कभी गुस्से में नहीं देखा। फिर रोज गाने का समय आता और हम तीनों... तुषार दादा, मीता और मैं दादाजी के साथ बैठते और उनके सामने तबला और सुर-पेटी पर गाते थे। वह हमें गाने के लिए कहते थे। यह गंभीर मामला हुआ करता था क्योंकि दादाजी हमेशा बहुत ध्यान से सुनते थे और अंत में अपनी टिप्पणी देते थे। हम उनकी सकारात्मक और प्रशंसनीय टिप्पणियों के लिए प्रयास करते थे। फिर अचानक वह हमसे पूछते कि क्या हमने यह या वह बंदिश या राग सीखा है और फिर हमें सीखाते थे। उनकी शिक्षण पद्धति बहुत धैर्यवान और गहन थी। वह आपका सर्वश्रेष्ठ मांगेंगे और हम हमेशा अपने प्रिय दादाजी के प्रति बहुत चौकस रहते थे। हर स्कूल की छुट्टियों में हम ग्वालियर जाया करते थे और दादाजी भी दिल्ली आते थे। वह काका चंद्रकांत जी के साथ हमारे मुनिरका घर कई बार आ चुके हैं।''

धार्मिक श्रद्धा

पंडित जी धार्मिक प्रवृत्ति के होने के कारण हर धार्मिक तिथि, त्योहार आदि को बड़ी श्रद्धा से मनाते थे। ''वह रोज दो-दो घंटे पूजा किया करते थे। उनके पूजा के कुछ मंत्र अलग-अलग रागों में थे अर्थात् वह सुबह के राग होते थे जैसे–भैरव, आसावरी, ललित, बिलावल, भैरवी आदि रागों में रोज मंत्र गाते थे।''[6] रोज एक ब्राह्मण दंपति को भोजन के लिए आमंत्रित करते, रोज सुबह उठकर पंचांग देखने के वे आदी थे। प्रदोष, एकादशी, गणेशचतुर्थी आदि के दिन उपवास रखते थे। जिन-जिन शहरों में वे जाते वहाँ के धार्मिक स्थलों का अवश्य दर्शन करते तथा धार्मिक विधियाँ संपन्न कराते थे। चर्तुमास्य में विशेष अनुष्ठान, अभिषेक कराते। इन दिनों में प्याज और लहसुन परिवार में कोई नहीं खाता था। पंडित परिवार के सारे कुलधर्म, कुलाचर वे यथोचित रीति से संपन्न कराते थे। परिवार में भगवान शंकर की विशेष पूजा की जाती थी। महाशिवरात्रि को भगवान शंकर की मूर्ति मिट्टी से बनाई जाती और उसकी प्राण प्रतिष्ठा कर अभिषेक होता। रात भर गाना बजाना होता तथा दूसरे दिन ब्राह्मण भोजन तथा तमाम शिष्यों एवं रसिकों को भोजन करवाया जाता था। जिसमें करीब 400 से 500 लोग आते थे। शहर के बाहर जाते समय यदि दिशाशूल हो, तो किसी मंदिर में देवदेवक की स्थापना करके जाते थे। वह वापसी में यदि नौवां दिन पड़ता तो घर न आकर किसी मंदिर में रहते थे, एक दिन के लिए। मंदिरों में गाना वे अपना कर्तव्य मानते थे। यहाँ तक कि मंदिर के संचालक यदि भूल जाए की कब मंदिर में गाना होना है, तो वह अपने शिष्य को भेज कर याद दिलाते थे कि वह इस दिन गाने आ रहे हैं। रामनवमी के दिन तो सायंकाल से ही ग्वालियर के दो-तीन राम मंदिर में वे गाने जाते थे। शंकराचार्य तथा अन्य संतमहात्मा के सन्मुख भी गाने के लिए उत्सुक रहते थे। मंदिरों में तथा संतमहात्माओं के सन्मुख वे अष्टपदियाँ तथा पद विशेषकर प्रस्तुत करते थे। इन सब का उद्देश्य इस पारंपरिक धरोहर का सामान्य जनता में प्रचार-प्रसार का रहना था।[7]

गायकी की विशेषता

श्रीमती वीणा जोशी जी पंडित जी की गायकी के विषय में कहती हैं। पंडित जी की गायकी याने परिपूर्ण गायकी। ऐसी गायकी अब सुनने को नहीं मिलेगी। वह इसका चित्रण इस प्रकार करती हैं, ''जिस प्रकार से दुल्हन का शृंगार किया जाता है वैसे ही राग का शृंगार भी किया जाता है। हमारी अष्टांग गायकी वहीं शृंगार की तरह है। अलग-अलग मात्राओं से उठकर तिहाई लेना, आलाप, बोल आलाप, बहलावा आदि वहीं सब तो है।'' पं. कृष्णराव शंकर पंडित की गायकी बड़ी विकट थी। पंडित जी की गायकी में राग की शुद्धता, स्थाई और अंतरे की कलात्मक और सौंदर्यपूर्ण प्रस्तुति, विराट एवं परिपक्व आकार, बहलावे का कलात्मक उपयोग, आवाज पर असाधारण प्रभुत्व, तीनों सप्तकों में सहज विचरण, अप्रतिम तैयारी तथा विलक्षण लयकारी गायकी की कुछ विशेषताएँ हैं। पंडित जी की ख्याल गायन शैली अष्टांग यानी आठ अंगों से सुशोभित हैं जिसमें आलाप, बोल आलाप, तान, बोलतान, मींड, गमक, खटका, मुर्की तथा विभिन्न लयकारियों का सुंदर सम्मिश्रण पाया जाता है। ''ताल से भिड़ते हुए लयकारी के करिश्मे दिखाते चलना पंडित जी की विशेषता थी। दुगुन, चौगुन, अठगुन के साथ आड़, कुआड़, बियाड़ जैसे कठिन लयकारियों का वह बड़ी कलात्मकता से मेल करते थे।''[8] दानेदार तानों तक वे बड़ी सफाई से पेश करते थे। कहीं से मुखड़ा पकड़कर सम पर आना उनके लिए सहज था। किसी तान के अंत में जब अवरोही की तेज सपाट तान मारकर वे मुखड़े पर आते तो लगता मानो मोतियों की लड़ी सर्राटे से बिखर गई हो या फिर गमक भरी तान की धन-गर्जना के बाद पूरब से पश्चिम तक मानो तड़ाक से बिजली कौंध गई हो।

ख्याल के अतिरिक्त टप्पा तथा तराना गायन शैली में भी पंडित जी का सामान प्रभुत्व था। टप्पा जैसा की सर्वविदित है कि यह एक अत्यंत कठिन एवं कष्ट साध्य शैली है। ऐसे कुछ ही विद्वान कलाकार हैं जिनका नाम उंगलियों पर गिना जा सकता है जो इस शैली में दक्ष हैं। पंडित जी उन गिने-चुने लोगों में से थे जो इस गायन शैली पर अपना

प्रभुत्व बनाए हुए थे। ख्याल और टप्पा के साथ-साथ पंडित जी तराने की अदायगी भी समान अधिकार से करते थे। तराना में राग, ताल तथा लय का एक अनोखा आनंद इनकी गायकी में मिलता है। उस्ताद नत्थू खां साहब के पास परंपरागत उन बंदिशों के साथ-साथ तरानों का अमूल्य खजाना था, जिसे पहले शंकर पंडित ने उनसे सीखा बाद में अपने पुत्र कृष्णराव जी को उसकी शिक्षा दी। इसके अतिरिक्त ठुमरी, भजन, जयदेव की अष्टपदी, मराठी पद, झूला एवं विशिष्ट अवसरों पर गाए जाने वाला श्लोक भी वे अपनी परंपरागत शैली में प्रस्तुत करते थे। [9]

पंडित लक्ष्मणकृष्ण राव शंकर पंडित जी द्वारा साक्षात्कार में उन्होंने एक घटना का जिक्र किया। जिससे पंडित जी के गायकी के विभिन्न रूप उजागर होते हैं। यह घटना 1950 के दशक की है, ''मैं पंडित जी के साथ अमृतसर राग सभा में भाग लेने गया था। इस सम्मेलन के दौरान एक दोपहर हम जहाँ ठहरे थे उस कमरे में कुछ कलाकार आए जिनमें से थे पंडित कुमार गंधर्व, पंडित भीमसेन जोशी, पंडित गोपाल मिश्र, पंडित ए कानन, पंडित महापुरुष मिश्र और उनके कुछ शिष्य अपने साज सहित अर्थात सारंगी और तबला लेकर आए। चाय पानी हुआ, बातों बातों में कमरे में गाने सुनने की बात हुई। कमरे में तानपुरे तो थे ही। पंडित ए कानन ने तानपुरा मिलाकर गाना शुरू किया, गाना समाप्त होने पर पंडित कुमार गंधर्व और गोपाल मिश्र जी ने पंडित जी से अनुरोध किया कि वह उन्हें कुछ ऐसी चीजें सुनाएँ, जो उन्होंने कभी न सुनी हो। पंडित जी ने पहले तो पंडित ए कानन की तारीफ करते हुए उन्हें आशीर्वाद दिया और अपने स्वर में तानपुरा को मिलाने को कहा। पंडित कुमार गंधर्व ने तानपुरे की जोड़ी मिलाई। अभी सब कलाकार यह सुनने को उत्कंटित थे कि उन्होंने ना सुनी, ऐसी कौन सी चीज पंडित जी गाने वाले हैं। पंडित जी ने बीन (रूद्र वीणा) का आलाप, जोर और झाला गले से गाकर सुनाया। ऐसा लग रहा था कि गले में साक्षात् रूद्रवीणा बज रही है। जिसमें उन्होंने तरह-तरह की मींड, सूत, गमक, घसीट का प्रयोग करके ऐसा वातावरण बनाया जो अद्‌भुत था। बाद में उन्होंने कुछ दुर्लभ बंदिश सुनाई जिसे सुनकर सारे कलाकार मंत्रमुग्ध हो गए। पंडित जी का व्यक्तित्व इतना विशाल था की सदैव संगतकार उनके साथ संगत करने के लिए ललायित रहते थे। ऐसी कई घटनाओं के रोचक किस्से हमें सुनने को मिलते हैं। विद्वानों और जानकारों के अनुसार जहाँ अन्य गायकों को सम की खोज करनी पड़ती थी, वहीं पंडित जी के पीछे लय चलता था। ऐसे ही उन्हें लय सम्राट थोड़ी कहा जाता था। उस्ताद हबीबुद्दीन खान साहब के साथ प्रसिद्ध संगीत विद्वान प्रोफेसर एस के सक्सेना के अनुसार, उन्होंने उनसे गायकों के साथ खुश न होने का कारण पूछा। खान साहब ने कहा भाई, सादा ठेका बजाकर कौन खुश है? मेरे जैसे तालवादक पंडित कृष्णराव जी के साथ बजाने पर ही खुश होते हैं, जिन्होंने कभी भी मुझे स्वतंत्र रूप से बजाने के लिए नहीं रोका।

दूसरा किस्सा, उस्ताद अलाउद्दीन खान अपनी प्रस्तुति करने के लिए ग्वालियर महल आये थे। वे कृष्णरावजी की बागेश्वरी से बहुत प्रभावित हुए। पंडितजी ने प्रसिद्ध ख्याल, कौन गत भाई गा रहे थे और उनके शिष्य पंडित पी.डी. सप्तर्षि वायलिन पर उनका साथ दे रहे थे। उस्ताद अलाउद्दीन इतने प्रभावित हुए कि वे अचानक उठ खड़े हुए और पंडित सप्तर्षि से वायलिन लेकर उनके साथ बजाने लगे। बाबा उस्ताद अलाउद्दीन खान का वायलिन पर असाधारण नियंत्रण था। किन्तु जब पंडित जी ने बहुत तेज गति से ख्याल शुरू किया तो एक समय ऐसा आया जब बाबा ने वायलिन को एक तरफ रखते हुए कहा कि, ''वह पंडित जी के कठिन तान नहीं बजा पाएँगे''। इसी तरह बंबई के एक संगीत मंडली में गाते हुए प्रसिद्ध हारमोनियम वादक पंडित गोविंद राव तेम्बे पंडित जी के साथ थे। बहुत तेज गति के तानों के चरण के दौरान, उन्होंने घोषणा की कि इन तानों को वह नहीं बजा पाएँगे।

भारतीय संगीत में योगदान

सही मायने में कहाँ जाए तो ग्वालियर घराने की गायकी को आगे ले जाने में पंडित जी का बहुत बड़ा योगदान है क्योंकि उनके समय में आधुनिक युग की भी कई चुनौतियाँ थी। स्वतंत्रता के बाद शास्त्रीय संगीत जगत में बड़े उलट-फेर हुए पंडित जी ने वह समय भी देखा है जब राजाश्रय एकदम से छिटक गया था और आकाशवाणी का दौरा प्रारम्भ हो गया था। जब बैठकों का दौर, गोष्ठियों का स्वरूप बदल रहा था। किंतु इस समय में भी पंडित जी ने विभिन्न चुनौतियों का सामना करते हुए अपने ग्वालियर घराने की टकसाली परंपरा को जो की पहले से चली आ रही थी उसमें बिना किसी प्रकार का छेड़छाड़ किए उसके शुद्ध रूप को बनाए रखा। श्री सुरेंद्र दंड़वते बताते हैं कि पंडित जी की दृष्टि में संगीत एक पवित्र आह्वान था। उन्होंने अपने पिता-गुरु से प्राप्त परंपरा को निष्ठापूर्वक निभाया। ग्वालियर घराने की ध्रुपद अंग की अष्टांग गायकी को शुद्ध बनाए रखा। यद्यपि भावनाओं, माधुर्य से ज्यादा तकनीकी पूर्णता पर जोर देने के लिए उनकी आलोचना भी की गई थी, किन्तु फिर भी उन्होंने इसमें कोई बदलाव नहीं किया। पंडितजी ने ग्वालियर की परंपरागत गायन शैली का प्रचार व प्रसार अपने लेखन और प्रसारण माध्यमों के द्वारा भी किया। आकाशवाणी के विभिन्न केंद्रों 1939 से 1982 तक संगीत का प्रसार और दूरदर्शन के दिल्ली, मुंबई आदि केंद्रों से प्रदर्शन भेंटवार्तायें, डिमॉन्सट्रेशन और डॉक्यूमेंट्री आदि प्रदर्शित हुए। श्रीमती नीला भागवत द्वारा–''पंडित जी अपनी तैयारी और तकनीकी निपुणता के लिए बहुत प्रसिद्ध थे। उनके गायन को ग्वालियर घराने का सबसे प्रामाणिक प्रतिनिधित्व माना जाता था। पंडित जी विश्व पुरुष थे। वह अपने गायन से विश्व जीतना चाहते थे। और वह अपनी काबिलियत साबित करके ऐसा करने में सफल भी रहे। फिर भी, यह कहना मुश्किल है कि वह एक लोकप्रिय संगीतकार थे। जहाँ विष्णु दिगंबर पलुस्कर ने लोगों को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए भजन गायन का सहारा लिया, शास्त्रीय संगीत को अतिरिक्त के रूप में प्रस्तुत किया। इसी तरह भासकरबुवा बाखले और रामकृष्ण बुआ वाज़े, ने भी किया। हालाँकि यह सब प्रख्यात शास्त्रीय गायक

थे, किन्तु लोग उन्हें, उनके द्वारा रचित मंच संगीत के लिए अधिक जाने जाते थे।

लेकिन पंडित जी लोगों तक पहुँचने के लिए इन लोकप्रिय रूपों को अपनाने में विश्वास नहीं करते थे। उसके लिए इस तरह, समझौता करना अपवित्रता का कार्य होता।''

ग्वालियर गायन शैली के संरक्षण, संवर्धन के लिए पं. कृष्णराव जी के पिता पं. शंकरराव पंडित एवं उस्ताद निसार हुसैन खां ने उनको आज्ञा दी कि वह एक कॉलेज की स्थापना करें। जिसे 31 जनवरी 1914, को बसंत पंचमी के शुभ अवसर पर 'शंकर गंधर्व महाविद्यालय' की स्थापना कर उन्होंने पूर्ण स्थित माधवगंज में स्थापित था। ''जहाँ दोनों समय प्रातः एवं शाम को तीन-तीन घंटे कक्षाएँ लगती थी। दोनों समय पंडित जी स्वयं संगीत की तालीम देते थे। प्रारंभिक कक्षा के छात्रों को लगभग 40 से 50 अलंकारों पर नित्य प्रति अभ्यास करना अनिवार्य होता था। फिर विभिन्न रागों पर आधारित सरगमें तैयार कराई जाती थी। दूसरे वर्ष में कुछ रागों की चीजों (बड़ा ख्याल, छोटा ख्याल, तराना आदि) कराई जाती थी। फिर चीजों के साथ गायकी की तालीम दी जाती थी। उसमें प्रत्येक छात्र को समस्त शिक्षक एवं छात्रों के समक्ष प्रत्येक गुरुवार को अपनी तालीम का प्रदर्शन करना अनिवार्य होता था। जिससे कि उन्हें मंच पर प्रदर्शन करने का अनुभव हो। सुर, लय, ताल में कोई कमजोर नहीं रहे इसलिए प्रत्येक छात्र को अलग-अलग अभ्यास भी कराया जाता था। प्रत्येक को यह भी निर्देश दिए जाते थे कि वह अपने घर पर एक हाथ से तानपुरा बजाये कथा एक हाथ से डग्गे से ताल देते हुए गायन का अभ्यास करता रहे। पंडित जी छात्रों के अभिभावकों से उनके अभ्यास की जानकारी भी लेते रहते थे। प्रतिवर्ष प्रत्येक छात्र को परीक्षा में बैठना अनिवार्य होता था तथा उसी छात्र को उत्तीर्ण घोषित किया जाता था, जो निर्धारित पाठ्यक्रम पूर्ण रूप से गाकर बताता था। एक-एक छात्र की डेढ़-दो घंटे तक परीक्षा ली जाती थी। प्रातः 9:00 बजे से रात्रि 9:00 बजे तक परीक्षाएँ सात से आठ दिन तक चलती रहती थी।''[10] शंकर गंधर्व विद्यालय में मासिक शुल्क के रूप में एक छोटी राशि जमा की जानी थी, अगर पंडित जी एक गरीब प्रतिभाशाली छात्र के सामने आते हैं, तो वह न केवल उन्हें निः शुल्क प्रवेश देंगे बल्कि उन्हें एक संतुलित आहार प्रदान करेंगे ताकि वे अपना रियाज ठीक से कर सकें। अगर किसी और प्रकार की सहायता भी चाहिए होती थी तो वह पूर्णता उसे पूरा करने की कोशिश करते थे। डॉक्टर खेर बताते हैं कि जब उनका ग्वालियर से मुरैना तबादला हो गया था तो वह बड़े निराश हो गए थे कि उनकी संगीत की शिक्षा अधूरी रह जाएगी। उन्होंने अपनी यह निराशा पंडित जी के समक्ष रखी, फिर पंडित जी ने आश्वासन देते हुए कहा कि तुम चिंता मत करो, तुम जाओ तुम्हारी संगीत की शिक्षा अधूरी नहीं रहेगी। मैं तुम्हें सिखाऊँगा, तुम हर रविवार यहाँ ग्वालियर आ जाया करना, मैं तुम्हें तालीम दूँगा, तुम वापस जाकर उसका रियाज़ करना और अगले रविवार को फिर से मुझे सुना देना। ऐसा शिष्यों के प्रति स्नेह और प्रेम कम ही देखने को मिलता है।

विद्यालय की शाखाएँ देश के विभिन्न भागों में चलती थी जैसे– लाहौर, अमृतसर, मुल्तान, जम्मू, सिंध हैदराबाद, सागर, जलगांव, आगरा, नरसिंहगढ़, नागपुर, कोलकाता, इंदौर आदि। विभाजन के बाद पाकिस्तान की शाखाएँ बंद हो गई थी और कुछ शाखाओं के संचालकों का निधन या अपना स्थान बदलने से विद्यालय बंद हो गए।

''गुरुवार की महफिल की तो शान ही अलग थी और इसकी शुरुआत उस्ताद निसार हुसैन खां साहब द्वारा की गई थी। ग्वालियर में बाहर से आने वाले संगीत-रसिक गुरुवार की महफिल में जरूर आने का प्रयत्न करते थे। पहले सारे विद्यार्थियों का गाना होता था, फिर कोई मेहमान कलाकार हो तो उसका गाना और सबसे अंत में पं. कृष्णराव जी गाते थे। हर गुरुवार को उनके गाने के प्रस्तुतीकरण में अंतर रहता था।''[11] यह गुरुवार संगीत की परंपरा इतने वर्षों से आज भी चली आ रही है यहाँ तक कि इस कोरोना काल में भी इस प्रथा को डिजिटल माध्यम से जारी रखा गया और यह मेरे लिए बड़े ही सौभाग्य की बात है कि इस गुरुवार की संगीत परंपरा में मुझे भी अपना गायन प्रस्तुत करने का मौका मिला।

पं. कृष्णराव पंडित जी केवल प्रायोगिक पक्ष के ही नहीं बल्कि शैक्षणिक पक्ष के भी विद्वान थे। उन्होंने भारतीय संगीत के प्रचार-प्रसार की सुविधा के लिए एक स्वतंत्र स्वरलिपि का आविष्कार किया। उन्होंने संगीत की अनेक पुस्तकों की रचना की जिनमें संगीत सरगम सार, संगीत प्रवेश भाग 1. और 2. संगीत आलाप संचारी, तबला वादन शिक्षा भाग 1. और 2., सितार, जलतरंग वादन शिक्षा और हारमोनियम वादन शिक्षा भाग 1. और 2. प्रमुख है। पंडित जी ने विभिन्न रागों में अनेक मौलिक बंदिशों का सृजन भी किया। इन बंदिशों में उनकी विद्वता, अनुभव, हजारों बंदिशे कंठस्थ होना, उनका चिंतन आदि का प्रभाव दिखता है। विभिन्न तालों में बद्ध उनकी बंदिशें राग का कलात्मक परिचय देते हुए साहित्य में गेय रस पैदा करती है। वे संस्कृत, हिंदी, मराठी तथा उर्दू के ज्ञाता थे। प्रत्येक गुरुवार की सभा में अपने गायन के अंत में ''गुरु बिन कैसे गुण गाऊँ'' यह गुरु वंदना उसी समय अलग-अलग रागों में बद्ध करके गाना उनकी अनोखी, प्रतिभा, विद्वता का नमूना था।

जैसे मैंने पहले भी इसका उल्लेख किया है कि पंडित जी बड़े आध्यात्मिक पुरुष थे। उनका यह आध्यात्मिक पक्ष उनके द्वारा रचित कई रागों की बंदिशों में भी देखा जा सकता है। जैसे–

- राग कोमल ऋषभ आसावरी, ताल–तीनताल, द्रुत ख्याल

स्थाई – तू तो जपले राम यही एक आधार।
अंतरा – झूठी माया झूठी काया एक राम नाम साचा॥

- स्वर रचना, राग मधुवंती, ताल–झपताल

स्थाई – कृपा करो नाथ भव के तरैया।
अंतरा – इत तू ही उत तू ही जल तू ही थल तू ही।
अपने कर्म से नैया करो पार॥

पंडित जी के कुछ पसंदीदा राग

यमन, हमीर, बिहाग, पूरिया, मारवा, दरबारी, मिया मल्हार, परज, मालकौंस, जयजयवंती, देसी, देशकर, बिलावल, तिलक कामोद, शंकर, भोपाली, देश, बसंत, भैरव, तोड़ी, भैरवी, पीलू, बहार, काफी, गौड़ मल्हार, गौड़ सारंग, बागश्री, मधुबंती, मुल्तानी, छायानट, रागेश्वरी, आदि।

कुछ अप्रचलित राग

मलुआ केदार, बहार के प्रकार, सुहा सुघराई, जोगिया मांड, शंकर बिहाग, नट केदार, नट कमोद, हंसकिंकिणी, चंद्रकौंस, सुर मल्हार, भोप कल्याण, यामिनी देवगिरि बिलावल, विभास मारवा थाट से, मल्हार के प्रकार आदि।

शिष्य

पं. कृष्णराव पंडित जी की शिष्यों की संख्या हजारों में है। उनमें से कुछ प्रसिद्ध शिष्यों के नाम उल्लेखनीय हैं–पंडित एन. एम. उर्फ बलुआ जोशी, पंडित सदाशिवराज अमृतफले, पंडित पांडुरंग राव उमडेकर, पंडित जी. एस. मोरघोड़े, पंडित विश्वनाथ जोशी, पंडित पी. डी. तथा आर.डी. सप्तऋषि, पंडित केशवराव सुरंगे, पंडित काशीनाथ तुलपुले, पंडित एकनाथ सरोलकर, पंडित चिरजीलाल जिज्ञासु, पंडित गोविंदराव कुलकर्णी, पंडित बालकृष्ण मसुरकर, पंडित बी. एन. क्षीरसागर, पंडित चिंतामणि जैन, पंडित सीतारामशरण, पंडित वि. जी. रिंगे, पंडित गोपालराव पटवर्धन, पंडित शरदचंद्र आरोलकर, पंडित रामचंद्र हिरवे, प्रोफेसर भद्रसेन कुमार, पंडित भूदेव शास्त्री दीक्षित, पंडित मथुरानाथ शुक्ल, पंडित बद्रीप्रसाद शर्मा, पंडित तारा सिंह, पंडित रामाश्रय शास्त्री, पंडित मांडवगणे आष्टी, पंडित पणके अमरावती, प्रोफेसर शंकर तारे, प्रोफेसर रामप्रकाश, प्रोफेसर मुन्नीलाल शर्मा, प्रोफेसर हरेन सेन गुप्ता, प्रोफेसर मनोहरलाल खन्ना, प्रोफेसर गुरुबख्श सिंह, प्रोफेसर लाल खां, कुमार भट्ट, हरिराम गोरेजा, महेश दत्त पांडेय, संतदास, श्रीनिवास बाई धारवाड़, मेहता बंधु भगिनी, प्रोफेसर कुंजासिंह, सरदार प्रतापसिंह, साधना महाजनी, बसंत कुमार, पंडित केशवराव राजहंस, श्रीमती सुमन चौधरी, पंडित परिवार से पं. केशवराव पंडित, पं. नारायणराव पंडित, पं. लक्ष्मणराव कृष्णराव पंडित, पं. चंद्रकांत पंडित, श्री मदन पंडित, श्री तुषार पंडित, डॉ. मीता पंडित इत्यादि।

सम्मान

पूज्यनीय पंडित जी को सम्मान और मान्यता सरकार और यहाँ के हर शहर के रसिकों से प्राप्त हुई है। उन्हें सैकड़ों पदक, मेडल और उपाधियाँ प्राप्त हैं। कुछ के नाम निम्नलिखित हैं–

1921 में गायक शिरोमणि की उपाधि, अखिल भारतीय कांग्रेस, अहमदाबाद द्वारा

1922 में संगीत शिरोमणि की उपाधि, मुल्तान संगीत सभा, मुल्तान द्वारा

1923 में लय सम्राट की उपाधि, पटियाला महाराज द्वारा

1923 में संगीत विशारद की उपाधि, हरीवल्लभ संगीत सभा, जालंधर द्वारा

1935 में संगीत सम्राट की उपाधि, राजा चक्रधर सिंह, रायगढ़ स्टेट द्वारा

1945 में संगीत रतनांलाकर की उपाधि, राजा जीवाजी राव सिंधिया, ग्वालियर राज्य द्वारा

1957-1959 में नागरिक सम्मान, नगर पालिका निगम ग्वालियर, मुंबई, भोपाल, इंदौर, सागर, जलगांव आदि द्वारा

1959 में राष्ट्रीय गायक की उपाधि, भारत के राष्ट्रपति द्वारा

1961 में डॉक्टर ऑफ म्यूजिक की उपाधि, खैरागढ़ इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय द्वारा

1971 में स्वर विलास की उपाधि, सुर श्रृंगार संसद, मुंबई द्वारा

1973 में पद्मभूषण सम्मान, भारत के राष्ट्रपति द्वारा

1973 में शिखर सम्मान, मध्य प्रदेश सरकार द्वारा

1975 में गानमहर्षि की उपाधि, जगतगुरु शंकराचार्य द्वारा

1980 में फेलोशिप अवार्ड, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा

1980 में तानसेन सम्मान, मध्य प्रदेश सरकार द्वारा

1982 में भुवालका अवार्ड, संगीत सौरभ, कोलकाता द्वारा

1989 में संगीत भीष्माचार्य की उपाधि, ऑल वर्ल्ड मराठी सम्मेलन द्वारा और भी ऐसे कई सम्मान पंडित जी को प्राप्त हुए हैं। पर सबसे ऊँचा सम्मान तो जो उन्होंने संगीत-रसिकों के हृदय में स्थान पाया है, वह है।

ऐसे जन लोकप्रिय महापुरुष पं. कृष्णराव शंकर पंडित जी अपने अंतिम समय तक भारतीय संगीत की सेवा करते हुए 22 अगस्त 1989, मंगलवार, कृष्ण जन्माष्टमी के दिन नाद ब्रह्म में लीन हो गए।

उपसंहार

उस्ताद नत्थन पीरबख्श द्वारा स्थापित ग्वालियर के ख्याल गायकी के सही मायने में पंडित कृष्णराव शंकर पंडित जी उत्तराधिकारी हैं। उन्होंने इस गायकी का संरक्षण, संवर्धन एवं प्रचार-प्रसार किया। गायकी का मूल रूप सुरक्षित रखते हुए उसको नए आयाम दिए हैं। उस टकसाली गायकी को पूरी तरह आत्मसात कर लिया जो पंडित परिवार ने अपनी पूरी लगन, परिश्रम एवं गुरु भक्ति से प्राप्त की। वह केवल ख्याल गायक ही नहीं थे। टप्पा, ठुमरी, चतुरंग, तराना, भजन, त्रिवट, आदि गायन शैलियों पर भी उनका सम्मानाधिकार था। वह अपने गायन शैली में ग्वालियर की अष्टांग गायकी का प्रयोग भली-भाँति करते थे। उन्होंने जो गहराई और ऊँचाइयाँ इस कला में स्थापित की है, वह अतुलनीय है। शायद ही कोई कलाकार उसको पार कर सके।

पंडित जी का जीवन भी एक आदर्श पुरुष का रहा है, उन्होंने अपना पूरा जीवन एक साधक के रूप में व्यतीत किया। वह छोटे-बड़े सभी के प्रिय रहे। वह अपने उसूल के पक्के थे, सिद्धांत के पीछे उन्होंने दो बार ग्वालियर दरबार से त्यागपत्र भी दिया था। उनकी जीवन यात्रा हम जैसे संगीत विद्यार्थियों के लिए प्रेरणादायक है।

पंडित जी गुरु शिष्य प्रणाली के समर्थक रहे। इस प्रणाली के दोषों को कम करने का उन्होंने पूरा प्रयास किया था। उन्होंने विद्यालय की स्थापना की, कई किताबें प्रकाशित करने के साथ ही नोटेशन सिस्टम भी बनाया। विद्यार्थियों को नियमित शिक्षा देने में वह हरदम तत्पर रहते हैं। उनके अनुसार–गुरु शिष्य प्रणाली और आधुनिक विद्यालयीन प्रणाली के संगम से संगीत की शिक्षा स्तर में सुधार लाया जा सकता है। संगीत के विद्यार्थियों के लिए एक बार प्रमाण पत्र लेना पर्याप्त नहीं है, उसे तो हर संगीत सभा में अपनी कला का प्रमाण पत्र देना चाहिए। ऐसा उनका मत था।

अंत में पंडित जी के संपूर्ण जीवन पर दृष्टिपात करने से यह निष्कर्ष निकलता है कि उनका जीवन संगीत के लिए समर्पित रहा, उनका जन्म ही संगीत की तपस्या व प्रचार-प्रसार के लिए हुआ था।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. पंडित, लक्ष्मण कृष्णराव, भारतीय संगीत के अमर साधक पं. कृष्णराव शंकर पंडित; मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ एकादमी, भोपाल, संस्करण : 2020, पृ. 1
2. पंडित, तुषार, भारतीय संगीत के महान संगीतकार पं. शंकरराव पंडित, कनिष्का पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, संस्करण : 2002, पृ. 9
3. संगीत (संगीत कार्यालय, हाथरस) अंक जुलाई 1985, पृ. 45
4. पंडित, लक्ष्मण कृष्णराव, भारतीय संगीत के अमर साधक पं. कृष्णराव शंकर पंडित; मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ एकादमी, भोपाल, संस्करण : 2002, पृ. 15
5. साक्षात्कार, पंडित लक्ष्मण कृष्णराव पंडित
6. कलावार्ता–पंडित कृष्णराव शंकर पंडित जन्म शताब्दी, संस्करण : 2002, जुलाई 1992, पृ. 46
7. पंडित, लक्ष्मण कृष्णराव, भारतीय संगीत के अमर साधक पं. कृष्णराव शंकर पंडित, संस्करण : 2002, पृ. 38
8. संगीत, पंडित कृष्णराव शंकर पंडित जन्म शताब्दी अंक जुलाई 1993, पृ. 3
9. कलावार्ता–पंडित कृष्णराव शंकर पंडित जन्म शताब्दी, जुलाई 1992, पृ. 21
10. कलावार्ता–पंडित कृष्णराव शंकर पंडित जन्म शताब्दी, जुलाई 1992, पृ. 53
11. साक्षात्कार, पंडित लक्ष्मण कृष्णराव पंडित